किरण कुमार

मिट्टी का क्या दोष?

"मेरा स्पर्श दे सकता है सुन्दर आकार"

मिट्टी का क्या दोष?

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-90-6

Price: ₹ 295.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

मिट्टी का क्या दोष?

किरण कुमार

लेखिका परिचय

लेखिका, किरण कुमार का जन्म 01.05.1957 में कोलकाता में हुआ। उन्होंने बी.ए. (हिन्दी ऑनर्स), एम.ए. (हिन्दी), बी.एड. की शिक्षा कोलकाता विश्वविद्यालय से पूर्ण की है।

वर्तमान समय (2015) में वे शिक्षण क्षेत्र में कार्यरत हैं और 1983 से वर्तमान समय तक (2015) नई दिल्ली के होली चाईल्ड सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में शिक्षिका के रूप में पदस्थ हैं।

उन्हें हिन्दी अकादमी दिल्ली की ओर से वर्ष 2007 में हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार और शिक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए पुरस्कार भी प्राप्त है।

लेखिका से सम्पर्क हेतुः–

मोबाईलः 91-9312955506
ई-मेल - *sakaarsapne@gmail.com*

पुस्तक के विषय में

बदलते मूल्यों के इस युग में हमारे छात्र अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझ रहे हैं। निराशा, कुण्ठा, भ्रम और तनाव से ग्रस्त छात्रों के व्यवहार में अस्वाभाविकता बढ़ती जा रही है। शिक्षकों के सामने बड़ी बड़ी चुनौतियाँ हैं ।

एक शिक्षिका होने के कारण मैंने अपने अनुभवों और विचारों को इस पुस्तक के रूप में संकलित किया है। 'मिट्टी का क्या दोष?' पुस्तक ऐसे अध्यायों का संग्रह है जिनमें कल का भविष्य बनने वाली आज की पीढ़ी की अनेक समस्याओं को उजागर कर निदान प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक शिक्षकों के लिए अवश्य ही सहायक सिद्ध होगी तथा विचार करने को बाध्य करेगी।

यह पुस्तक सम्पूर्ण मानव जाति के उत्कर्ष की प्रेरणा का दर्पण है।

- किरण कुमार

प्रस्तावना

तीव्र गति से परिवर्तित होते हुए इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति भय, चिंता, असुरक्षा, सदमों और आघातों के बीच जी रहा है। हिंसा और अपराधों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। तकनीक की गिरफ्त में जकड़ा मानव संवेदना शून्य होकर धीरे–धीरे 'यंत्र मानव' बनता जा रहा है। घृणा, द्वेष, स्वार्थ, कामुकता और लोभ जैसी भावनाएँ सामाजिक ढाँचे को बीमार कर रही हैं। स्थितियाँ भयावह होती जा रही हैं। निराशा के इस दौर में आशा की किरण यदि दिखाई दे रही है तो वह है शिक्षक समुदाय।

केवल शिक्षक वर्ग ऐसा है जिसके पास है प्रतिभा, जिसके पास है शक्ति, जिसके पास है पद्धति और जिसके पास है अधिकार, जिनका प्रयोग अपनी कक्षाओं में कर वह मानवता को नया स्वरूप प्रदान कर सकता है। नैतिकता के होने वाले पतन के कारण समाज में फैले प्रदूषण को शिक्षक ही अपने छोटे – छोटे प्रयासों द्वारा दूर कर सकता है।

''शिक्षकों! अब हमें उद्धारक बनना होगा।
बदल कर अपनी भूमिका उपचारक होना होगा।।''

समर्पित

उन सभी बच्चों को जिनकी आँखों ने सपने साकार
होने के सपने देखे हैं।

आभार

कुछ अहम् लोगों की प्रेरणा और सहयोग के बिना महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न नहीं हो पाते।

सिस्टर थेरेस

मिट्टी का क्या दोष?

मिट्टी तो तैयार है किसी भी आकार में ढलने के लिए। उसे प्रतीक्षा है ऐसे कुम्हार की जिसे प्रशिक्षण लेना है मिट्टी को गूँथने का, चाक चलाने का, कोमल हाथों से गीली मिट्टी को नये, सुन्दर – सुन्दर बर्तनों, दियों, घड़ों और खिलौनों में परिवर्तित करने का। इनको निर्मित करने से पहले कुम्हार को नयी–नयी कल्पनाएँ करनी हैं। उसे तय करना है कि क्या सृजन करना है और कैसे? बहुत ही संवेदनशील कार्य है यह। कोमल मिट्टी को आकार देते समय मामूली सी भी चूक हो गयी तो सारा का सारा आकार ही बिगड़ गया! कल्पना धराशायी हो गयी! मिट्टी व्यर्थ हो गई!

क्या इसमें मिट्टी का दोष है कि उसे आकार में ढालने वाले इस बात से परिचित नहीं थे कि मिट्टी को चाक पर चलाते समय बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है? इस बात का ध्यान रखना तो कुम्हार का काम है कि मिट्टी को सुन्दर आकार देने के लिए किस प्रकार के स्पर्श की आवश्यकता है। कच्ची मिट्टी में तो सारे गुण धर्म विद्यमान हैं, कुम्हार को सोचना है कि कैसे उस मिट्टी से सुन्दर, पक्का और टिकाऊ घड़ा बनाये जो दूसरों की प्यास बुझा सके। कैसे प्यारा सा दिया बनाये जो अपने प्रकाश से औरों के अँधेरे दूर कर सके। कैसे आकर्षक खिलौने बनाए जो दूसरों को खुशियाँ दे सकें। यदि कुम्हार ने जल्दबाजी में और अपना कार्य समाप्त करने की धुन में जैसे–तैसे बर्तन बनाने आरंभ कर दिये तो बहुत से बर्तन पूरे बनने से पहले ही टूट जायेंगे या उनका आकार बिगड़ जायेगा और कुछ नहीं तो उन पर खरोंचें अवश्य पड़ जायेंगी।

हमारे छात्रों के बदलते व्यवहार हमें अनेक संकेत दे रहे हैं। वे हमसे कुछ कहना चाहते हैं, कुछ पूछना चाहते हैं, परन्तु क्या हम उन्हें सुन और समझ पा रहे हैं? उचित दिशा निर्देश की प्रतीक्षा में वे दुविधाओं और समस्याओं के बीच जी रहे हैं। बदलते सामाजिक परिवेश में बदलती हुई उनकी सोच से शिक्षकों की चिन्ताएँ और शिकायतें बढ़ती जा रही हैं।

मानसी और रोहण भी अनेक प्रकार के अन्तर्विरोधों तथा अन्तर्द्वन्द्वों से जूझ रहे हैं। उनके प्रिय दादाजी जो एक शिक्षक भी हैं, क्या उनकी भावनाओं को समझ पा रहे हैं? रवि बाबू और अमर सर की संवेदनशीलता तथा विवेकशीलता क्या शिक्षकों एवं छात्रों की व्याकुलता को दूर करने में सहायक हो पा रही है?

लेखिका से संपर्क के लिए ईमेल करें:
sakaarsapne@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-81-19927-90-6
9 788119 927906